

307000 - तलाक के प्रकार

प्रश्न

तलाक के कितने प्रकार हैं?

विस्तृत उत्तर

विभिन्न मानदंडों के आधार पर तलाक के कई प्रकार हैं, जो इस प्रकार हैं :

पहला :

तलाक के प्रकार उसके हुक्म के एतिबार से।

धर्मशास्त्रियों ने तलाक को उसके शर्ई हुक्म के एतिबार से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया है :

1. शरीयत के अनुसार जायज़ तलाक : इसे "सुन्नी तलाक" कहा जाता है। यह महिला को एक तलाक देना है, जबकि वह गर्भवती हो, या ऐसी पवित्रता की अवधि के दौरान जिसमें उसने उसके साथ संभोग नहीं किया है।
2. निषिद्ध तलाक जो इस्लामी शरीयत के विरुद्ध है : इसे "बिदई तलाक" (स्वःरचित तलाक) कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है :

(क) अपने समय के एतिबार से बिदई तलाक, जैसे कि किसी ऐसी महिला को तलाक देना जिसका गर्भवती होना स्पष्ट न हो, और उसके लिए मासिक धर्म के आधार पर इदत का पालन करना हो, जबकि वह मासिक धर्म की स्थिति में हो, या पवित्रता की अवस्था में हो जिसके दौरान उसने उसके साथ संभोग किया हो। लेकिन अगर उसका गर्भवती होना स्पष्ट हो गया है : तो उसे तलाक देना जायज़ है, भले ही उसने पवित्रता की अवधि के दौरान उसके साथ संभोग किया हो। इसी तरह, अगर वह इदत का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है, जैसे कि वह महिला जिसके पास उसके पति ने प्रवेश नहीं किया है। तो अगर वह उसे मासिक धर्म के दौरान तलाक दे देता है : तो यह तलाक सुन्नत के अनुसार है। या अगर वह उन लोगों में से एक है जिन्हें मासिक धर्म नहीं आता है, जैसे कि एक युवा लड़की या एक बूढ़ी औरत : तो उसे तलाक देने में उसपर कोई हर्ज नहीं है।

(ख) अपनी संख्या के एतिबार से बिदई तलाक : जैसे कि वह उसे एक से अधिक तलाक देता है और कहता है : "तुम्हें दो तलाक है", या "तुम्हें तीन तलाक है। क्योंकि सुन्नत का तरीका यह है कि वह उसे एक तलाक दे।

बिदई तलाक के मान्य होने के बारे में विद्वानों ने मतभेद किया है। हमारा पसंदीदा दृष्टिकोण यह है वह तलाक नहीं होता है, और यह कि तीन तलाक एक ही पड़ता है।

दूसरा :

प्रयुक्त शब्दों के एतिबार से तलाक के प्रकार

धर्मशास्त्रियों ने तलाक को उसमें प्रयुक्त शब्दों के एतिबार से स्पष्ट और सांकेतिक में विभाजित किया है।

स्पष्ट तलाक : जिससे केवल तलाक ही समझा जाता है (उसके अलावा और कुछ नहीं समझा जा सकता), जैसे कि आदमी का अपनी पत्नी से कहना : तुम तलाकशुदा हो, या तुम्हारा तलाक हो गया, या मैंने तुम्हें तलाक दे दिया। यह तलाक हो जाता है, चाहे पति उसे तलाक देने का इरादा रखता हो या नहीं।

सांकेतिक तलाक : वह है जिससे तलाक या उसके अलावा कुछ और मुराद होने की संभावना होती है। जैसे कि एक पुरुष का अपनी पत्नी से यह कहना : "तुम खाली या बरी (स्वतंत्र) हो" या "तुम्हारा मामला तुम्हारे हाथ में है", या "तुम्हारी रस्सी तुम्हारे कंधे पर है" या "तुम अपने परिवार से जा मिलो", या "मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है", और इसी तरह।

इस प्रकार के तलाक में नीयत का एतिबार किया जाता है। अगर पति ने तलाक का इरादा किया है, तो तलाक हो जाएगा, नहीं तो नहीं।

तीसरा :

तलाक के प्रकार उसपर निष्कर्षित प्रभावों के एतिबार से

तलाक के उसपर निष्कर्षित होने वाले प्रभावों के एतिबार से दो प्रकार हैं :

1. तलाक रजई : और यह उस समय होता है जब पति अपनी पत्नी को, बिना किसी मुआवजे के, पहली तलाक या दूसरी तलाक देता है; उसके लिए उसकी इद्दत समाप्त होने से पहले उसे वापस लौटाना जायज़ है।

2. तलाक बाइन : इसके दो प्रकार हैं :

(क) बैनूनह कुबरा : यह उस समय होता है जब कोई पुरुष अपनी पत्नी को तीसरी तलाक दे देता है। इस स्थिति में, वह (महिला) उसके लिए वैध नहीं है जब तक कि वह उसके अलावा किसी अन्य पति से वैध निकाह में शादी न कर ले, फिर वह पति उससे अलग न हो जाए।

(ख) बैनूनह सुगरह : यह है कि कोई पुरुष अपनी पत्नी को पहली या दूसरी तलाक दे, फिर उसकी इद्दत समाप्त हो जाए; या वह मुआवजे के बदले में अपनी पत्नी को तलाक दे, जिसे 'खुल' कहा जाता है; या वह उसके पास प्रवेश करने से पहले उसे तलाक दे दे। इस स्थिति में उसके लिए अपनी पत्नी को लौटाना जायज़ है, लेकिन यह एक नए विवाह अनुबंध और एक नए महर के साथ होना चाहिए।

प्रश्न संख्या : (258878) का उत्तर देखें।

चौथा :

पूर्ण या लंबित होने के एतिबार से तलाक के प्रकार।

यह दो प्रकार का होता है :

1- पूर्ण या निश्चित तलाक, जैसे कि वह अपनी पत्नी से कहता है : "तुम तलाकशुदा हो" या तलाक के इरादे से अन्य सांकेतिक शब्द कहे, जबकि तलाक को किसी शर्त पर लंबित न करे।

2. किसी शर्त पर लंबित तलाक, जो तीन प्रकार का होता है:

(क) वह एक शुद्ध शर्त पर लंबित हो, तो इससे हर स्थिति में तलाक हो जाएगा। जैसे कि वह कहे : "जब सूर्य अस्त हो जाए, तो तुम तलाकशुदा हो।" तो ऐसी स्थिति में, सूर्य अस्त होने पर उसे तलाक हो जाएगा; क्योंकि उसने उसे एक शुद्ध शर्त पर लंबित किया है।

(ख) वह शुद्ध शपथ हो, तो इस मामले में उससे तलाक नहीं होगा। लेकिन इसमें शपथ तोड़ने का प्रायश्चित्त अनिवार्य है। जैसे कि वह कहता है : "यदि मैंने ज़ैद से बात की, तो मेरी पत्नी तलाकशुदा है। इससे उसका इरादा खुद को ज़ैद से बात करने से रोकना है। इसलिए यह एक शुद्ध (स्पष्ट) शपथ है, क्योंकि उसके ज़ैद से बात करने और उसके अपनी पत्नी को तलाक देने के बीच कोई संबंध नहीं है।

(ग) उसमें एक शुद्ध शर्त और एक शुद्ध शपथ दोनों की संभावना हो। ऐसी स्थिति में, उस व्यक्ति के इरादे को देखा जाएगा, जिसने इसे लंबित किया है, जैसे कि वह अपनी पत्नी से कहे : "यदि तू घर से बाहर निकली, तो तुझे तलाक है।" इसमें इस बात की संभावना है कि उसने शर्त का इरादा किया है, जिसका अर्थ यह है कि अगर उसकी पत्नी बाहर जाती है, तो वह उससे प्रसन्न होगा, और उस पर उसका तलाक पड़ जाएगा। इस मामले में वह तलाक का इच्छुक समझा जाएगा।

या यह हो सकता है कि उसका इरादा तलाक देने का नहीं था; बल्कि वह अपनी पत्नी में रुचि रखता है, भले ही वह बाहर जाए, और वह उसे तलाक नहीं देना चाहता, लेकिन ऐसा करके उसका इरादा उसे बाहर जाने से रोकने का था, इसलिए उसने धमकी के तौर पर उसे तलाक पर लंबित कर दिया। यदि वह इस स्थिति में बाहर जाती है, तो उसे तलाक नहीं पड़ेगा, क्योंकि इससे अभिप्राय शपथ है।

तथा देखें : "अश-शहर्फ अल-मुम्ते'" (13/126)।

यह सलाह दी जाती है कि डॉ. अवज़ अश-शहरी की "तलाक" नामक पुस्तक को भी पढ़ें, जो एम. ए. की एक थीसिस है।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।